आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाज़ी बच्चों का संघ

बालकनामा

बालकनामा अखबार को आवश्यकता है आपके सहयोग की। आप इस प्रकार से अनुदान देकर हमारे दानदाता बन सकते हैं :-

5000 रूपए (डायमंड)

2000 रूपए (गोल्डेन)

500 रूपए (सिल्वर)

हम आपका नाम व राशि अगले अंक में प्रकाशित करेंगे।

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें -
31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- balaknamaeditor@gmail.com

अंक-53 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | नवंबर-दिसंबर, 2015

आज के समय सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार बालकनामा लिखकर प्रकाशित करने लगे।

विश्व में पहली बार स्ट्रीट चिल्ड्रन ने खुद कर दिखाई अपनी गणना

छोटी उम्र में दिया बड़ा संदेश

बालकनामा ब्यूरो

अकसर सड़क एवं कामकाजी बच्चों को अनदेखा और अनसुना किया जाता है। इनकी संख्या का पता न होने के कारण सरकार द्वारा जो भी योजनाएं बनाई जाती हैं, वो इन बच्चों तक नहीं पहुंच पाती हैं। इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए बढ़ते कदम - सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संगठन के सदस्यों ने एक कदम स्वयं बढ़ाते हुए अपनी गणना खुद कर दिखाई और सरकार व देश के सामने असंभव होने वाले कार्य को भी संभव कर दिखाया।

बढ़ते कदम संगठन के सदस्यों ने 4 नवंबर, 2015 से सड़क एवं कामकाजी बच्चों की गणना का कार्य दिल्ली के सराय काले खां में किया और 20 नवंबर, 2015 तक यह गणना कर दिखाई । गणना को सुचारू रूप से करने के लिए उन्होंने इस क्षेत्र को पांच भागों में बांटा और इसका एक सामाजिक नक्शा बनाया। यह गणना 14 से 18 साल के बढ़ते कदम संगठन के सदस्यों द्वारा किया गया। यह गणना इन सदस्यों ने मात्र 13 दिनों पूरी कर ली।

इस गणना के मुख्य उद्देश्य सड़क एवं कामकाजी बच्चों की गणना की जरूरत पर सरकार का ध्यान आकर्षित करना और सड़क एवं कामकाजी बच्चों की गणना करने हेतु नए नए सुझावों और तरीकों को बताना था।

शेष पृष्ठ 2 पर

संपादकीय

प्रिय साथियों,

आप सभी को मेरा नमस्कार!

बालकनामा अखबार को इतना प्यार और सराहना देने के लिए हम सभी मीडिया और पाठकों का धन्यवाद करते हैं। आप के इसी प्रोत्साहन और सहयोग का परिणाम है कि हमारे अखबार की प्रसिद्धि दिन पर दिन बढ़ती जा रही है। इसी का परिणाम है कि हम सड़क एवं कामकाजी बच्चे कुछ अलग और ऐसी वास्तविक खबरें लेकर आते हैं, जिनकी ओर किसी का ध्यान भी नहीं जाता है।

इस अंक में भी हम अपने पाठकों के लिए कुछ ऐसी ही खबरें लेकर आएं हैं। इस बार बालकनामा टीम व सदस्यों ने सड़क एवं कामकाजी बच्चों की गणना करके, उसकी रिपोर्ट राष्ट्रीय बाल अधिकार आयोग के समक्ष सौंपी और उनके सामने यह प्रस्ताव रखा कि सड़क एवं कामकाजी बच्चों की गणना करना संभव है। इसके साथ ही हमने बच्चों पर बढ़ते बाल श्रम की सच्ची तस्वीर प्रस्तुत की है।

हम चाहते हैं कि आप बालकनामा अखबार को हर तरह का अपना सहयोग (छोटा या बड़ा, पैसे या किसी और प्रकार से) जारी रखें। यदि आप हमें सहयोग करना चाहते हैं तो ऊपर दिए गए पते पर हमसे संपर्क करें और अपने सुझाव हमें balaknamaeditor@gmail.com लिखकर भेजें।

संपादकीय मंडल

रोजी रोटी के दबाव में बच्चे अपना रहे हैं बाल मजदूरी के नए नए तरीके

क्या कानून में है इसका हल?

- नाबालिग लड़कियां बेच रही हैं कच्ची शराब के पाउच
- बाल विवाह की शिकार लड़कियां लगा रही हैं मेंहदी और बेच रही हैं गहने
- रिक्शे को धक्का लगाकर चलाते हैं अपनी रोजी रोटी
- शादी पार्टियों में काम करके कर रहे हैं जीवनयापन
- बच्चों से साफ कराया जाता है ट्रकों का मलबा

बालकनामा ब्यूरो

नाबालिग लड़कियां बेच रही हैं कच्ची शराब के पाउच

देश में कच्ची शराब का अवैध करोबार बहुत तेजी से गति पकड़ रहा है और झांसी शहर भी अब इससे अछूता नहीं है। यहां पर बड़ी संख्या में कच्ची शराब का अवैध कारोबार चल रहा है। अनुसूचित जनजाति के कबूतरा प्रजाति के लोग इस कारोबार में भारी संख्या में संलिप्त हैं। कबूतरा प्रजाति के लोग पूरे परिवार के साथ धडल्ले से इस कारोबार को चला रहे हैं।

इन परिवारों के पुरूष सदस्य कच्ची अवैध शराब बनाने का काम दिन रात करते हैं और इनके परिवार की महिलाएं और लड़कियां बनी हुई कच्ची शराब को झांसी शहर के कोने कोने में बेचने का काम करती हैं। जांच पड़ताल के दौरान पता चला कि इस प्रजाति की महिलाएं धड़ल्ले से खुले मैदान में बैठकर अपनी नाबालिग लड़कियों के साथ कच्ची शराब बेचती हैं और पुलिस प्रशासन को इस बात की भनक भी नहीं लगने देती। बालकनामा के बातूनी पत्रकार जब बस स्टैंड के सखी मंडी वाले मैदान में शराब बेचती एक महिला के पास गए और इनसे पूछा तो इन्होंने बताया कि 250मिली. के पाउच की कीमत 20 रू, अद्धा 500

शेष पृष्ठ 6 पर

बच्चों ने राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग की अध्यक्ष को सौंपी गणना की रिपोर्ट

चांदनी, रिपोर्टर शहीद कैम्प

सड़क एवं कामकाजी बच्चे राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग के कार्यालय जाकर वहां राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग की अध्यक्ष श्रीमती स्तुति कक्कड़ से मुलाकात की और उन्हें अपनी गणना की रिपोर्ट सौंपी और उन्हें जानकारी दी कि किस प्रकार बच्चों ने यह गणना की। इसके साथ ही उन्होंने गणना से जुड़े अपने अनुभवों को भी उनके साथ बांटा। सड़क व कामकाजी बच्चों द्वारा उठाए गए इस अनूठे कदम के बारे में जानकर श्रीमती स्तुति कक्कड़ जी बहुत खुश हुई। उन्होंने बच्चों द्वारा उठाए गए इस कदम की सरहाना की और बच्चों की गणना की रिपोर्ट भी देखी तथा 618 बच्चों का डाटा भी मांगा। श्रीमती स्तुति कक्कड़ जी ने कहा कि जो काम इतने सालों में नहीं किया गया, वो इन बच्चों ने कर दिखाया।

विश्व में पहली बार स्ट्रीट चिल्ड्रन ने खुद कर दिखाई अपनी गणना

गणना का क्षेत्र

काले खां फ्लाई ओवर के नीचे से निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन प्लेटफॉर्म नंबर 1 तक।
निजामुद्दीन नगली राजापुर से बारापुला फ्लाई ओवर के नीचे खाला का गोदाम तक।

गणना की पद्धति

बच्चों से मिलना
बात करना
पर्ची काटना
विषम समय प्रातः व रात्रि में विजिट करना
बच्चों की पुनरावृत्ति को रोकने हेतु दरगाह का धागा बांधना और उसे न खोलने की अपील करना
1098 चाइल्ड लाइन नंबर के बारे में जानकारी देना

गणना की खास बातें

यह गणना सड़क एवं कामकाजी बच्चों द्वारा उनके लिए की गई।
इस गणना के द्वारा सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने यह संदेश दिया कि यह संभव है।
इस गणना में बच्चों ने उन समस्याओं के हल निकालें, जिनका सर्वे करने के लिए बड़े लोग घबराते हैं।

भविष्य में की जाने वाली गणना के संबंध में सुझाव

समय व विधि में लचीलापन रखें
बच्चों से मित्रतापूर्ण ढंग से बात करें
बच्चे की स्थिति को समझते हुए बात करें
काम के प्रति ईमानदारी बरतें
बच्चों को गणना के उद्देश्य जरूर समझाएं

गणना के परिणाम

लगभग 1320 बच्चे गिनती में आए, जिनमें से 618 बच्चों से व्यक्तिगत रूप से मिले, और 483 बच्चों ने बात करने से मना कर दिया। 219 बच्चे ऑब्जरवेशन विजिट के दौरान पाए गए, जिनके चेहरे रोज बदलते रहे और वो एक स्थान से दूसरे स्थान पर काम करने जाने वाले बच्चे थे।
कुल 618 बच्चे, जिनमें 220 लड़कियां और 398 लड़के सड़कों पर रह रहे हैं। इनमें 0 से 5 वर्ष के 99 बच्चे, 5 से 10 वर्ष के 241 बच्चे, 10 से 15 वर्ष 203 बच्चे और 15 से 18 वर्ष के 73 बच्चे शामिल हैं। ज्यादातर बच्चे 6 से 15 वर्ष की आयु सीमा के बीच के हैं।
बाल मजदूरी के शिकार 155 बच्चे कबाड़ा बीनने वाले, 64 बच्चे भीख मांगने वाले, 64 बच्चे घुमंतू, 52 बच्चे रेस्टोरेंट व ढाबे में काम करने वाले हैं। इसके अलावा 35 बच्चे कोठियों में काम करने वाले, 15 बच्चे फूल, 13 बच्चे गुब्बारे, 7 बच्चे मूंगफली, 3 बच्चे कपड़े इत्यादि बेचने वाले हैं।
ये बच्चे कितने घंटे काम करते हैं। 342 बच्चों ने अपने काम करने के समय के बारे में जवाब दिया। जिसमें 50 प्रतिशत बच्चे 5 से 9 घंटे, 23 प्रतिशत 9 से 15 घंटे काम करते हैं।
सबसे अधिक काम करने वाले 306 बच्चे बिहार और 176 बच्चे उत्तर प्रदेश के हैं। शेष बच्चे बच्चे अलग अलग राज्यों मध्य प्रदेश, पश्चिम बंगाल, हरियाणा, असम, दिल्ली, राजस्थान, उड़ीसा, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, मणिपुर, नेपाल से आकर यहां पर रह रहे हैं और काम कर रहे हैं।

गणना के कुछ रोचक संस्मरण

17 वर्षीय शंभू गणना टीम का सदस्य
मुझे सबसे अधिक परेशानी उन बच्चों की गणना करने में आई जो बच्चे होटलों और ढाबों में काम कर रहे थे।ऐसी ही एक घटना के बारे में सोचकर मैं सिहर जाता हूं। गणना के दौरान जब मैं एक ढाबे में काम करने वाले बच्चे से बात कर रहा था तो उस दौरान उसका मालिक मेरे पास आया और मुझे डांटकर पूंछा ये क्या कर रहे हो और उसने मेरे सर्वे का कागज भी फाड़कर फेंक दिया। तब बिना घबराए मैंने उसे बताया कि मैं इस बच्चे को केवल चाइल्ड हेल्पलाइन नंबर के बारे में बता रहा था।

15 वर्षीय ज्योति गणना टीम की सदस्य
मुझे उस वक्त बहुत दुख हुआ जब मैंने छोटे छोटे बच्चों को 5-10 रूपए के लिए रिक्शे को धक्का लगाते देखा।

19 वर्षीय शन्नो गणना टीम की सदस्य
गणना के दौरान मैं यह देखकर हैरान हो गई कि काले खां पुल के नीचे बड़े पैमाने पर 30 से 40 नए बच्चों के चेहरे रोज बदलते रहते हैं। संभवतः इन बच्चों को काम कराने के लिए लाया जा रहा है।

चुनौती

कैसे पहचानें कि सड़क व कामकाजी बच्चे कहां हैं?

बड़े क्षेत्र की एक साथ गणना कैसे करें?

गणना के क्षेत्र की सीमा कैसे तय करें?

बच्चों की गणना की पुनरावृत्ति से कैसे बचें?

बाल श्रमिकों के मालिकों द्वारा बच्चों से बात करने से मना करने पर क्या करें ?

बच्चों की वास्तविक अथवा बदलती स्थिति का पता कैसे लगाएं?

हल

इसके लिए सड़क व कामकाजी बच्चों से एक सामाजिक नक्शा बनवाएं और उनकी राय लें।
गणना के लिए उस क्षेत्र को छोटे-छोटे भागों में बांटा जाए।
चूंकि ये बच्चे पटरियों, रोड, पफुटपाथ, नाले इत्यादि स्थानों के आस-पास रहते हैं इसलिए इन स्थानों से ही इनकी सीमा को चिन्हित किया जाए।
बच्चों के हाथ में फ्रेंडशिप धागा या धर्मिक धागा बांधे।
मालिकों को समझाएं कि हम बच्चों को 1098 चाइल्ड हेल्पलाइन नंबर की जानकारी दे रहे हैं।
विभिन्न समयों पर प्रातः, मध्याह्न व रात्रि में ऑब्जरवेशन विजिट करें।

गणना के दौरान उभर कर आए नए पहलू

पिछले वर्ष की तुलना में इस वर्ष बाल मजदूरों की संख्या बढ़ी है। इस वर्ष 258 नए बच्चे बाल मजदूरी से जुड़े हैं।
सबसे ज्यादा बाल मजदूर बिहार (306 बच्चे) और उत्तर प्रदेश (176 बच्चे) के हैं।
स्वच्छता अभियान के चलते भी कबाड़ा बीनने वाले बच्चों की संख्या बढ़ रही है।
सराय काले खां बाल तस्करी का एक केंद्र हो सकता है।
बच्चों को नशे में धड़ल्ले से झोंका जा रहा है।

16 वर्षीय चंदन गणना टीम का सदस्य
मुझे उस शाम परिवारवालों ने घेर लिया जो फ्लाईओवर के नीचे रहते हैं। जब मैंने उन बच्चों से बात की तो वे पूछने लगे कि यहां क्यों आए हो? मैंने उन्हें बताया कि मैं इन बच्चों की गणना करने आया हूं। इतना सुनते ही वो बोल पड़े कि तुम लोग सरकार की ओर से पैसा कमा रहे हो, हम तो सड़क पर ही पड़े रहेंगे तो फिर हमारी गणना करके क्या करोगे। यह सुनकर मुझे बहुत दुख हुआ।

18 वर्षीय चांदनी गणना टीम की सदस्य
मैं यह देखकर दंग रह गई जब एक बच्चे से नाम पूछने पर वह बच्चा एकदम शांत हो गया। फिर वह अपने मालिक की ओर देखकर बोला कि मेरा नाम मेरे मालिक से पूंछो। बच्चा उस वक्त तो शांत रहा, लेकिन अपने मालिक के जाने के बाद उसने अपने बारे में सब कुछ बता दिया।

बाल विकास मंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार ने बढ़ते कदम के सदस्यों को दिया 2000 रूपए का पुरस्कार

चांदनी

बढ़ते कदम संगठन के बाल साथियों को 14 नवंबर को लखनऊमें बाल दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में भाग लेने का अवसर प्राप्त हुआ। यह कार्यक्रम महिला एवं बाल विकास द्वारा लखनऊके इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान सेंटर में आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम में 30 जिलों के 600 बच्चों ने भाग लिया था। महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा सभी बच्चों के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम, गेम्स, पेंटिंग, सिंगिंग इत्यादि कार्यक्रम आयोजित किए गए थे।

इस कार्यक्रम में बढ़ते कदम संगठन के मथुरा के 6 बाल साथियों ने डांस कार्यक्रम में भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान जब गोपाल, नवी, पूजा, मुकेश, मोनू, दीपक ने 'कहते हैं हमको प्यार से इंडिया वाले' गाने पर डांस किया तो सारा स्टेडियम तालियों और सीटियों की गूंज से भर गया। बच्चों के साथ साथ बड़े भी अपनी जगह पर झूमने को मजबूर हो गए। इन सभी बाल साथियों को भी बहुत खुशी हुई कि उन्हें इतने बड़े मंच पर और इतने लोगों के बीच अपना डांस दिखाने का मौका मिला। इन्होंने कहा कि हमें अवसर मिले तो हम भी बहुत आगे तक जा सकते हैं। कार्यक्रम के अंत में हमारे बाल साथियों ने मुख्य अतिथि महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती सैयदा शादाब फातिमा, प्रिंसिपल सेक्रेटरी श्रीमती रेनुका कुमार, श्रीमती नाहिद लारी खान से मुलाकात कर डोरी से बने गिफ्ट भेंट किए। श्रीमती सैयदा शादाब सभी बच्चों से मिलकर बहुत खुश हुई और उन्होंने उनके डांस को सराहा। इसके साथ ही उन्होंने बढ़ते कदम के इन सदस्यों को 2000 रूपए पुरस्कार स्वरूप दिए।

मजीद ने बचाई ट्रेन से कटते हुए एक युवक की जान

मजीद

झांसी रेलवे स्टेशन पर रहने वाला एक 20 वर्षीय युवक मनमोहन गाड़ियों में पानी की बोतलें बेचता था। जुएं और सट्टे की बुरी लत के कारण इस पर बहुत कर्जा हो गया था। जिसके कारण मनमोहन ने आत्महत्या करने की सोची। एक दिन वह बहुत शराब पीकर ट्रेन से कटकर अपनी जान देने जा रहा था। शराब में धुत मनमोहन गाली गलौच करता हुआ अपनी जान देने की घोषणा करता हुआ रात को तकरीबन साढ़े आठ बजे स्टेशन के प्लेटफार्म नंबर दो पर नई दिल्ली-जबलपुर श्रीधाम एक्सप्रेस के नीचे जाकर पटरी पर लेट गया। उस वक्त स्टेशन पर बहुत सारे लोग मौजूद थे, लेकिन किसी ने भी मनमोहन को बचाने की नहीं सोची।

उसी समय मजीद स्टेशन पर खाली बोतलें बीनने का काम कर रहा था। उसने जब पटरी पर एक आदमी को लेटा हुआ और सामने से श्रीधाम एक्सप्रेस को आता हुआ देखा तो बिना किसी की

मदद के अपनी बोतलों की बोरी छोड़कर मनमोहन को पटरी से खींच लिया। मजीद ने जैसे ही मनमोहन को खींचा तो उसका पैर पटरी में फंस गया और तब तक ट्रेन आ गई और मनमोहन का पैर ट्रेन के पहिए के नीचे आकर कट गया। यह देख मजीद घबराया नहीं, बल्कि वह तुरंत जीआरपी थाने गया और वहां से एमर्जेंसी वालों को बुलाकर लाया। मनमोहन का इलाज कराने के लिए उसने स्टेशन से पैसे इकट्ठा किए और उसे मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया।

मजीद पिछले छह वर्षों से झांसी रेलवे स्टेशन पर कबाड़ा व पानी की बोतलें बीनकर अपना जीवनयापन कर रहा है। मजीद ग्वालियर का रहने वाला है। गंभीर बीमारी के चलते इसके माता पिता का देहांत हो गया था, जिसके कारण मजीद सड़कों पर रहने के लिए मजबूर हो गया। मजीद ने कक्षा छह तक पढ़ाई भी की है और थोड़ी थोड़ी अंग्रेजी भी पढ़ लेता है। मजीद बढ़ते कदम संगठन का जिला सचिव भी है। यह एक होनहार बालक है।

जुए के दलदल में फंसता बचपन

बालकनामा ब्यूरो

झांसी शहर के डडियापुर इलाके की आदिवासी बस्ती में जुए का मकड़जाल इस कदर फैलता जा रहा है कि छोटे छोटे बच्चे इसमें फंसते चले जा रहे हैं। इस बस्ती की जिस गली में देखो उसी में जुएं के फड़ ऐसे लगे होते हैं, जैसे बाजार में सब्जी आदि की दुकानें सजी होती हैं। वहां के बूढ़े, बड़ों के अलावा अब बच्चे भी अपने बड़ों को पीटे छोड़ते हुए फिल्मी सितारों की फोटो खरीदरकर पैसे दांव पर लगाते हैं। पहले तो फोटो से जुआं खेलना सीखते हैं और धीरे धीरे ताश की गड्डी से जुआं खेलना सीख जाते हैं। इस बस्ती में सुबह से लेकर रात तक बच्चे, बूढ़े सब जुआं खेलते नजर आते हैं। अंधेरा होने पर मोमबत्ती की रोशनी में ये नौनिहाल जुआं खेलने के साथ साथ अपने भविष्य को भी दांव पर लगा रहे हैं।

बस्ती में बढ़ रही इस समस्या को दूर करने के लिए जब वहां के स्थानीय लोगों से बात की गई तो एक 50 वर्ष की बुजुर्ग महिला ने बताया कि इस जुएं के कारण हमारी बस्ती का माहौल अत्यंत बिगड़ता चला जा रहा है। रात दिन जुएं के फड़ चलने के कारण जो बच्चे पढ़ने वाले हैं, उनका मन भी पढ़ाई में नहीं लग पाता। उन्होंने बताया कि इस समस्या से छुटकारा पाने के लिए कई बार हमने पुलिस थाने जाकर शिकायत भी की और पुलिस भी आई, लेकिन जुआरियों से पैसे लेकर उन्हें छोड़ देती है और हालात जस के तस हो जाते हैं। यही नहीं जो लोग इन जुआरियों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराकर आते हैं, पुलिस के जाने के बाद ये जुआरी शराब पीकर उनके साथ लड़ाई झगड़ा भी करते हैं। पुलिस तो इन जुआरियों को उन लोगों का नाम तक बता देती है, जो रिपोर्ट दर्ज कराने जाते हैं। इसी कारण अब कोई शरीफ व्यक्ति पुलिस से शिकायत करने भी नहीं जाता है।

बच्चे करेंगे कैलाश सत्यार्थी जी के साथ चाय पर चर्चा

चांदनी

बालकनामा अखबार की पत्रकार चांदनी, शंभू और सलाहकार शन्नो ने नोबल पुरस्कार विजेता श्री कैलाश सत्यार्थी जी से मुलाकात की। मुलाकात के दौरान चांदनी ने श्री कैलाश सत्यार्थी जी से कहा कि सर हम आपसे मिलने के लिए बहुत दिनों से प्रयास कर रहे थे और आज हम सब बहुत खुश हैं कि हमे आपसे मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। चांदनी ने उन्हें बताया कि वे बढ़ते कदम (सड़क व कामकाजी बच्चों का संगठन) से जुड़ी हैं और संगठन के बच्चे मिलकर सड़क व कामकाजी बच्चों का अपना अखबार 'बालकनामा' निकालते हैं। श्री कैलाश सत्यार्थी जी सड़क व कामकाजी बच्चों के अखबार बालकनामा के बारे में जानकर बहुत खुश हुए और कहा कि हमें तो पता ही नहीं था कि आप सड़क एवं कामकाजी बच्चे अपना अखबार भी निकालते हैं।

उन्होंने कहा कि मैं इस अखबार के सभी पत्रकारों से मिलना चाहूंगा और समय निकालकर किसी दिन आप पत्रकारों के साथ बैठकर चाय भी पिएंगे और आप सब से बातचीत भी करेंगे, कि कैसे इस अखबार के माध्यम से आप बच्चों की मदद करते हैं और कैसे लोग इस अखबार से जुड़ते हैं।

नवीन जिंदल ने सराहा बालकनामा अखबार को

बालकनामा ब्यूरो

श्री नवीन जिंदल, अध्यक्ष जिंदल स्टील एंड पावर और पोलो खिलाड़ी बालकनामा अखबार से बहुत प्रभावित हैं। उन्होंने बालकनामा अखबार की टीम और चेतना संस्था के निदेशक को मिलने को बुलाया। उन्होंने बालकनामा अखबार की टीम को यह आश्वासन दिया है कि वो सड़क व कामकाजी बच्चों के जीवन में सुधार लाने व उन्हें आगे बढ़ने में पूरा सहयोग करेंगे।

क्या किशोरों की उम्र घटाने से कम हो जाएंगे अपराध ?

शन्नो ने किशोरों की उम्र घटाने पर दिल्ली सरकार के समक्ष रखी बच्चों की राय

चांदनी

जहां एक ओर दिल्ली जैसे शहर में बच्चे बड़ी संख्या में अपराधों की ओर कदम बढ़ा रहे हैं, वहीं दूसरी ओर सरकार किशोरों की उम्र कम करने की वकालत में लगी है। जिसको लेकर सड़क व कामकाजी बच्चों के अलग अलग दृष्टिकोण हैं और सरकार के इस गैर विचाराधीन प्रस्ताव को लेकर सड़क व कामकाजी बच्चों के संगठन बढ़ते कदम के सदस्य भी परेशान हैं।

ज्ञातव्य हो कि दिल्ली सरकार द्वारा किशोरों की उम्र कम करने को लेकर वयस्कों की जो बैठक बुलाई गई उसमें बढ़ते कदम संगठन की सलाहकार और बालकनामा अखबार की पत्रकार 21 वर्षीय शन्नो ने भी भाग लिया। शन्नो ने बताया कि दिल्ली सरकार की इस बैठक में सम्मिलित होने से पूर्व हमने 40 से अधिक बच्चों व युवाओं का इंटरव्यू किया और बच्चों के साथ सामूहिक बैठक कर किशोरों की उम्र कम करने के संभावित तरीकों और विचारों पर चर्चा की।

हमने बच्चों द्वारा दिए गए सुझावों को सरकार के सम्मुख रखा।

स्टेशन पर कबाड़ा बीनने वाले 14 वर्षीय अफसर (परिवर्तित नाम) ने कहा कि, ''क्या उम्र कम करने से सारी समस्याएं हल हो सकती हैं? क्या सरकार इस बात की गारंटी ले सकती है कि किशोरों की उम्र कम करने से अपराध नहीं होंगे?''

शादी पार्टियों में काम करने वाले 16 वर्षीय गोवर्धन (परिवर्तित नाम) ने कहा कि, ''हां हमें पता है कि बच्चे अपराध करते हैं, लेकिन क्या सरकार द्वारा इसके कारणों का पता करने का पर्याप्त प्रयास किया गया। इसलिए पहले तो सरकार उन कारणों को बताए और फिर उम्र घटाने की बात करे।''

बढ़ते कदम संगठन की राष्ट्रीय सचिव 16 वर्षीय ज्योति ने कहा कि, ''यह एक सामाजिक समस्या है और इसका समाधान भी सामाजिक तरीके से

करने की आवश्यकता है। उम्र घटाना इसका समाधान नहीं हो सकता, जबकि बच्चों को अपराधों में ढकेलने के पीटे बड़ों का ही हाथ होता है।''

सड़क व कामकाजी बच्चों के अखबार बालकनामा की पत्रकार 18 वर्ष की चांदनी ने कहा कि, ''ऐसे किसी भी बच्चे का मामला, जो अपराध में लिप्त है, उसकी विशेष रूप से जांच की जरूरत है, क्योंकि उसके कारण भिन्न हो सकते हैं। आंख बंदकर निर्णय लेना अच्छा विचार नहीं होगा।''

लाजपत नगर मार्केट में खिलौने बेचने वाली 16 वर्ष की अफसाना (परिवर्तित नाम) ने कहा कि, ''बच्चों को अपराध से दूर रखने में पुलिस महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। इसके लिए उन्हें बच्चों के साथ जल्दी जल्दी बैठक करनी होगी।''

दिल्ली के उप मुख्यमंत्री श्री मनीष सिसोदिया जी ने यह आश्वासन दिया कि दिल्ली सरकार सड़क व कामकाजी बच्चों द्वारा दिए गए सुझावों पर भी विचार करेगी।

बहु प्रतिष्ठित TEDX एवं जोश टॉक ने बुलाया बालकनामा के सदस्यों को

ज्योति ने रखी प्रधानमंत्री से मिलने की चाहत

चांदनी / ज्योति

जैसा कि आप सभी जानते हैं कि TEDX एवं जोश टॉक बहुप्रतिष्ठित कार्यक्रम हैं और इन कार्यक्रमों जानी मानी हस्तियां भाग लेने आती हैं। इस कार्यक्रम के द्वारा लोगों को अपने और अपने टैलेंट के बारे में इतने बड़े मंच पर बोलने का अवसर मिलता है। इन लोगों की तरह बढ़ते कदम संगठन की राष्ट्रीय सचिव ज्योति और बालकनामा अखबार की पत्रकार चांदनी को भी अपनी बात रखने का मौका मिला।

ज्योति को एयर फोर्स के पास ऑडिटोरियम में आयोजित जोश टॉक के कार्यक्रम भाग लेने का मौका मिला। ज्योति ने बताया कि यह बहुत बड़ा कार्यक्रम था। दूर दूर से लोग इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए आए थे। इस कार्यक्रम में मैंने लोगों को बताया कि मैं सराय काले खां में अपने परिवार के साथ रैन बसेरे में रहती हूं। पहले मैं कबाड़ा बीनने व भीख मांगने का काम करती थी। सड़क पर

रहते हुए मैंने नशा करना भी सीख लिया था। इसके बाद मेरा संपर्क बढ़ते कदम संगठन से हुआ और मैं संगठन से जुड़ी। इससे जुड़ने के बाद मुझे आगे बढ़ने की एक उम्मीद नजर आने लगी। धीरे धीरे मैं अपने जैसे दूसरे बच्चों की मदद करने लगी।

इसी निष्ठा और आगे बढ़ने की चाह ने मुझे पहले लीडर, फिर जिला अध्यक्ष और अब राष्ट्रीय सचिव के पद पर पहुंचा दिया। अब मैं संगठन से जुड़े 10000 बच्चों का नेतृत्व कर रही हूं। मैं चाहती हूं कि जो बच्चे सड़कों पर रहकर अपना जीवनयापन कर रहे हैं, मैं उनकी बात सरकार और समाज तक पहुंचा सकें। इसलिए मैं प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी से मिलकर बात करना चाहती हूं। मैं उन्हें बताना चाहती हूं कि सड़क एवं कामकाजी बच्चों को किन किन परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। इसी प्रकार चांदनी ने बैंगलोर में आयोजित TEDX कार्यक्रम में अपनी बात रखी, जहां फैशन डिजाइनर, फिल्म जगत इत्यादि से संबंधित 13 सदस्यों को चुना गया था कि वे अपनी जिंदगी से जुड़े अनुभव सब के साथ बांटें। चांदनी ने बताया कि मेरे लिए खुशी की बात तो यह थी कि इतने बड़े मंच पर और इतने बड़े और अनुभवी लोगों के साथ मुझे भी अपनी बात कहने का अवसर मिला। मैंने अपनी जिंदगी और अपने अखबार बालकनामा के बारे में सबको बताया कि यह सड़क एवं कामकाजी बच्चों द्वारा लिखा व प्रकाशित किया जाने वाला विश्व का पहला अखबार है। मैं इस अखबार की पत्रकार हूं। मैंने अपनी जिंदगी से जुड़े कुछ पहलुओं के बारे में सभी को बताया।

इस प्रकार न सिर्फ मुझे, बल्कि बालकनामा अखबार को बैंगलोर में एक नई पहचान मिली और साथ ही TEDX की तरफ से बालकनामा को सहयोग करने का ऐलान भी किया गया। मैं उस समय हैरान हो गई जब बैंगलोर की मीडिया ने मेरा इंटरव्यू और लोगों ने मेरा ऑटोग्राफ लिया तथा मेरे साथ सेल्फी भी खिंचवाई।

प्रयास से मिली सफलता

पांच बच्चे पहुंचे स्कूल

शम्भू

यह कहानी रंजीत, तुफैक, समीर, अरबाज और सुहैल इन पांच बच्चों की है। यह बच्चे बढ़ते कदम संगठन के सदस्य हैं। पहले यह गांव में पढ़ाई करते थे। इन बच्चों के घर की स्थिति ठीक न होने के कारण यह अपनी पढ़ाई छोड़कर दिल्ली आ गए। 13 वर्षीय रंजीत इसके पापा मोची का काम करते हैं, 14 वर्षीय तुफैक के पापा कपड़ों का काम करते हैं, 13 वर्षीय अरबाज के पापा स्टेशन पर रेड़ी लगाते है, 12 वर्षीय समीर के पापा होटल में काम करते हैं। इन पांचो के माता पिता अलग अलग तरीके का काम करते हैं। इनके साथ साथ ये बच्चे भी काम करते है। यह बच्चे पढ़ना चाहते थे, लेकिन पढ़ नहीं पा रहे थे।

जब ये बढ़ते कदम संगठन से जुड़े तो जीआरपी थाने में पढ़ने आने लगे। ये पढ़ने में बहुत तेज हैं। जब हम सरकारी स्कूल में इन पांचों बच्चों का दाखिला कराने के लिए वहां की उप प्रधानाध्यापिका जी से मिले और उनसे बातचीत की तो उन्होंने बच्चों का जन्म प्रमाण पत्र मांगा। हमने उनसे कहा कि हमारे पास इन बच्चों का जन्म प्रमाण पत्र नहीं है। यह बच्चे गांव में पढ़ते थे, घर की समस्या के कारण यह दिल्ली आ गए। यह बच्चे पढ़ना चाहते हैं, लेकिन प्रिंसिपल ने कहा कि अगर आप इनकी जन्म पत्री नहीं देंगे तो इन बच्चों का दाखिला नहीं होगा। क्योंकि आप इन बच्चों की जितनी उम्र बता रहे हैं, देखने में इनकी उतनी उम्र नहीं लग रही है। इन बच्चों की उम्र बहुत ज्यादा लग रही है। इसलिए इन बच्चों के जन्म का कोई सबूत लाना होगा तभी हम दाखिला करेंगे।

यह स्थिति देखकर बच्चों को बहुत दुख हुआ कि मेरा दाखिला अब स्कूल में नहीं होगा और रंजीत रोने लगा। शम्भू ने बच्चों को आश्वासन दिया कि हम तुम्हारा स्कूल में दाखिला किसी भी हाल में करवा कर रहेंगे आप चिंता मत करो। फिर शम्भू ने चेतना संस्था के कार्यकर्ता ममता दीदी से बात कि और उन्हें बताया कि यह बच्चे पढ़ने के लिए बहुत उत्सुक हैं, लेकिन इन बच्चों का दाखिला नहीं हो पा रहा है। क्योंकि इनके पास किसी भी तरह का कोई दस्तावेज नहीं है और मैं चाहता हूं कि इन पांचो बच्चों का दाखिला दिलाने में आप हमारी मदद करें, तो ममता दीदी ने इन पांचों की केस स्टडी बनाई, जिसमें सभी जरूरी जानकारी मौजूद थी। उसके बाद यह स्कूल में जमा करने के बाद इन बच्चों का दाखिला हो गया। अब यह बच्चे बहुत खुश हैं और रोज स्कूल जाते है। शम्भू के एक छोटे से प्रयास से यह पांचो बच्चे स्कूल में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

क्या इमलाक कभी जा पाएगा स्कूल?

शम्भू

11 वर्षीय इमलाक बढ़ते कदम का सदस्य है। इमलाक को कम सुनाई देता है और उसे बोलने में भी थोड़ी परेशानी होती है। इमलाक को चीजें थोड़ा देर में समझ आती हैं, लेकिन बुद्धि का वह बहुत तेज है। इमलाक पहले तो कॉन्टेक्ट प्वाइंट पर जाकर पढ़ाई करता था, लेकिन बाद में उसकी पढ़ाई छूट गई। इमलाक की पढ़ाई बीच में टूटने के कारण उसके माता-पिता परेशान हो गए।

जब उसके माता-पिता को इमलाक की पढ़ाई जारी रखने का कोई और रास्ता नजर नहीं आया तो उन्होंने सोचा कि इमलाक का दाखिला सरकारी स्कूल में करा देते हैं। वह अपने बेटे को लेकर स्कूल गए और प्रधानाचार्या को सारी बातें बताई तो उन्होंने कहा कि हम आपके बेटे का दाखिला नहीं ले

सकते, क्योंकि इमलाक ना तो सही से बोल पाता है और न ही सुन पाता है।

प्रधानाचार्या की ये बातें सुन इमलाक की मम्मी को बहुत दुख हुआ। उन्होंने प्रधानाचार्या से कहा कि मेरा बेटा दूसरे बच्चों से थोड़ा अलग है, उसे बोलने व सुनने में थोड़ी परेशानी होती है, लेकिन वह पढ़ाई में तेज़ है।

उन्होंने यह भी कहा कि मैडम अगर आप मेरे बेटे से प्यार और आराम से बोलेंगी तो यह समझकर लिख व पढ़ सकता है। लेकिन अध्यापक ने इमलाक की मम्मी की एक भी बात नहीं सुनी और कहा कि अगर हम एक बच्चे के लिए इतना समय लगाएंगे, तो हम दूसरे बच्चों को कैसे पढ़ा पाएंगे। इमलाक को जब इस बात का पता चला तो वह बहुत उदास हो गया।

इमलाक का दाखिला स्कूल में नहीं हो पाया और इस तरह वह अपनी पढ़ाई से दूर हो गया। इमलाक जैसे न जाने कितने बच्चे हैं, जो विकलांगता का शिकार होने के कारण समाज द्वारा उपेक्षित किए जाते हैं। हम चाहते हैं कि आप लोग ऐसे हजारों इमलाक जैसे बच्चों की मदद करने के लिए आगे आएं और उनका हौसला बढ़ाएं।

बालकनामा के बातूनी पत्रकारों ने किया दौरा : दिल्ली में कितना सफल हुआ स्वच्छ भारत अभियान

बालकनामा ब्यूरो

दिल्ली में यह स्वच्छ भारत अभियान कितना सफल हुआ और किस किस को शौचालयों की सुविधा मुहैया कराई गई इस हकीकत का मुआयना किया बालकनामा के पत्रकार ने। पत्रकार ने शौचालयों की सुविधा पर जब दिल्ली में झुग्गी झोपड़ियों, सड़क, फुटपाथ, फ्लाई ओवर और रेलवे स्टेशनों के आस पास रहने वाले बच्चों से बातचीत की तो उन्होंने बताया कि हम बच्चे ऐसे स्थानों पर रहते हैं, जहां पर दूर दूर तक शौचालय का नामों निशान तक नहीं है। और अगर गलती से आपको यह कहीं दिख भी गया तो वह इतने गंदे हैं कि वहां पर जाना नामुमकिन हैं। इस कारण हम बच्चे शौच के लिए बाहर जाने को मजबूर हैं।

आपको जानकर हैरानी होगी कि भारत में 640 मिलियन लोग खुले में शौच करने को मजबूर हैं। जिसके कारण प्रति वर्ष 7,00,000 बच्चे डायरिया जैसे गंभीर रोगों का शिकार होकर मौत के मुंह में जा रहे हैं।

खुले में शौच को मजबूर हैं सड़क की बेटियां

सर्वे के मुताबिक भारत में 100 मिलियन शौचालय बनाने की आवश्यकता है।

पत्रकार ने झुग्गी झोपड़ियों में रहने वाली लड़कियों से बात की तो उन्होंने बताया कि उनके यहां शौचालय न होने के कारण उन्हें बाहर जाने में बहुत डर लगता है। पूजा (परिवर्तित नाम) ने बताया कि जब सुबह लड़कियां एवं लडके शौच फ्लाई ओवर के नीचे या दूर कहीं स्थानों पर जाते हैं तो कुछ लोग मोबाईल से उनका वीडियो भी बना लेते हैं। उन्होंने बताया कि यह कोई कहानी नहीं है, हकीकत है। पूजा ने बताया कि एक दिन मैं और मेरी मम्मी शौच कर रही थी, तब एक लड़का वहां पर मोबाईल लेकर खड़ा था। जब मैंने मम्मी को बोला तो मम्मी ने कहा कि पत्थर उठाकर फेंक दें को जिससे वह भाग जाए। हम सभी लड़कियां बहुत डर डरकर बाहर शौच के लिए जाते हैं।

लड़कियों ने कहा कि स्वच्छ भारत अभियान के चलते हम सब सड़क व कामकाजी बच्चों को भी शौचालयों की सुविधा प्रदान की जाए, जिससे हम महफूज रह सकें और हमारा कोई भी किसी तरह से शोषण न कर सके। ये सारे बच्चे चाहते है कि जिस तरह सरकार ने रैन बसेरे में बाथरूम दिया है उसी तरह हमारे यहां भी बाथरूम की व्यवस्था करे। तभी इस समस्या का हल हो सकेगा अगर सरकार ने हम बच्चों के लिए कुछ नहीं किया तो इसका हम बच्चों के जीवन पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ सकता है।

बढ़ते कदम बना 'इबने बतूता पहन के जूता' मुहिम का एंबेसडर

बालकनामा ब्यूरो

एक्शन एड और सामाजिक संस्था चेतना द्वारा 'इबने बतूता पहन के जूता' अभियान की शुरूआत की गई है। इस अभियान के तहत आम आदमियों को सड़क व कामकाजी बच्चों के प्रति संवेदनशील बनाया जा रहा है। बढ़ते कदम संगठन इस अभियान का एंबेसडर है। संगठन के सदस्य सड़क पर रहने वाले बच्चों की आवाज जन जन तक पहुंचाने के लिए लाजपत नगर मार्केट और आईआईटी दिल्ली जैसे प्रतिष्ठित स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित कर रहे हैं और 'इबने बतूता पहन के जूता निकल पड़ा तूफान में, थोड़ी हवा नाक में घुस गई थोड़ी घुस गई कान में' गाने पर डांस करके लोगों को बच्चों के मुद्दों के प्रति जागरूक कर रहे हैं। 14 वर्षीय दीपक ने बताया कि मुझे बहुत खुशी हुई कि हमें दिल्ली के भारतीय प्रौद्योगिकी

संस्थान में अपनी कला का जौहर दिखाने का मौका मिला। इसके साथ ही हमने लोगों के सामने सड़क एवं कामकाजी बच्चों की समस्याओं जैसे ये बच्चे कैसे अपना जीवनयापन करते हैं, इसके बारे में बताया। उन्हें बताया कि सड़क एवं कामकाजी बच्चों जीवन से जुड़े इन अनछुए पहलुओं पर ही यह डॉक्यूमेंट्री फिल्म बन रही है। 15 वर्षीय सुलताना ने इस डॉक्यूमेंट्री फिल्म से जुड़े अपने अनुभव बांटते हुए कहा मुझे बहुत खुशी है कि हम जैसे बच्चों को भी फिल्म में आने का मौका मिला और अब हमारे बारे में पूरी दुनिया के लोग जानेंगे। इसलिए हम बच्चे बहुत खुश हैं। उसके बाद 16 वर्षीय अफजल ने बताया कि आज डांस करने में मुझे बहुत अच्छा लगा और मैंने पहली बार सभी बच्चों के साथ लाजपत नगर मार्केट में डांस किया और हमारे डांस की शूटिंग भी की गई। मेरे लिए यह बहुत खुशी की बात है कि हम सब की यह फिल्म लोग इंटरनेट व टी.वी. पर देख सकेंगे।

ज्योति के प्रयास से पूरम पहुंचा अपने घर

शम्भू

बढ़ते कदम की राष्ट्रीय सचिव ज्योति की मुलाकात काले खां के बैहलोर पुर में ढाबे पर काम करने वाले एक बाल साथी से हुई। ज्योति ने उससे बात करने की कोशिश की तो पता चला कि वह बच्चा अपनी मर्जी से ढाबे में काम नहीं कर रहा है। वह ये काम करने के लिए मजबूर है। ज्योति के बहुत पूछने पर उसने डरते डरते बताया कि वह बिहार का रहने वाला है। उसका नाम पूरम गिरी है और वह 16 साल का है। उसके पिता का नाम मनोज गिरी व माता का नाम गायत्री देवी है।

पूरम ने बताया कि उसके यहां आने का कारण उसकी गरीबी थी। वह अपने गांव में पढ़ाई करता था, पर उसकी बहन की शादी होने के बाद वह अपने गांव वालों के साथ दिल्ली आ गया। पूरम जिन लोगों के साथ दिल्ली आया था, वह उसे आनंद विहार रेलवे स्टेशन प्लेटफार्म न. 2 पर ही छोड़ कर चले गए। पूरम रेलवे स्टेशन पर अपने आप को अकेला देख रो रहा था। तब एक व्यक्ति जो टायर खरीदार था, वहां आया और पूरम से मिला और उसे काले खां बैहलोरपुर में ले जाकर एक ढाबे में काम पर लगा दिया।

पूरम ने बताया कि ढाबे वाला उसको बहुत मारता है और उस पर अत्याचार करता है। पूरम के साथ हो रहे इस तरह के शोषण को जानने के बाद ज्योति ने कार्यकर्ता सुरेंदर जी को फोन किया और इस बारे में जानकारी दी। इसके बाद संस्था के कार्यकर्ता मिनहाज, ज्योति और बालकनामा का रिपोर्टर शम्भू पूरम के मालिक से मिले और उन्हें बताया कि 18 साल से कम उम्र के बच्चों से काम करवाना कानूनी अपराध है। यह जानने के बाद उसके मालिक ने पूरम से माफी मांगी और कहा कि मैं पूरम के जितने पैसे हैं वह भी उसे देने के लिए तैयार हूं। आप मुझे माफ कर दीजिए। मैं आगे से ऐसा नहीं करूंगा।

बढ़ते कदम की इस पहल से पूरम को उसके पैसे मिल गए। फिर सभी ने उसे घर वापस जाने के लिए कहा तो वह तैयार हो गया।

इस तरह पूरम को काले खां से आंनद विहार रेलवे स्टेशन छोड़ने गए। वह बिहार जाने वाली ट्रेन में बैठकर अपने घर वापस चला गया। उसने हमें फोन करके बताया कि वह सकुशल अपने घर पहुंच गया है और उसने धन्यवाद देते हुए यह भी कहा कि वह अपने घर पहुंकर बहुत खुश है।

'क्योंकि मैं एक लड़की हूं' अभियान ने दी एक दिशा

ज्योति

20 अक्टूबर को इंडिया हैबिटेट सेंटर में एक मीटिंग का आयोजन किया गया। यह मीटिंग प्लान इंडिया द्वारा सन् 2009 में चलाए गए 'क्योंकि मैं एक लड़की हूं' अभियान पर आधारित थी। इस कार्यक्रम में अलग अलग संस्थाओं के कार्यकर्ताओं और अधिकारियों ने भाग लिया। बढ़ते कदम संगठन की राष्ट्रीय सचिव ज्योति ने भी सड़क पर रहने वाली लड़कियों की समस्याओं को इस मीटिंग में रखने के लिए उपस्थित थी। 'क्योंकि मैं एक लड़की हूं' एक बहुत ही अनूठा अभियान है। इस अभियान ने सड़कों पर रहने वाली लड़कियों को एक नई दिशा दे रहा

है। ज्योति ने बताया कि मैं भी सड़क पर रहने वाली एक लड़की हूं और मुझे भी बहुत सारी मानसिक परेशानियों से गुजरना पड़ता है। लड़कियों को इन परेशानियों से निकालने के लिए हमें उनके साथ बात करनी चाहिए और मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई कि इस अभियान के तहत स्कूलों व बस्तियों में जा जाकर लड़कियों के साथ बातचीत की जाती है। और यह जानने का प्रयास किया जाता है कि वे किसी भी समस्या का तो शिकार नहीं या किसी नाकारात्मक सोच की वजह से वह अपना जीवन बर्बाद तो नहीं कर रही। इस तरह हमें पता चलेगा कि लड़कियों को किन किन मुसीबतों का सामना करना पड़ता है तथा उन पर किस तरह के जुल्म और अत्याचार किए जाते हैं। ज्योति ने बताया कि इस कार्यक्रम के तहत जो लड़कियां अपनी पढ़ाई पूरी नहीं कर पा रही हैं, उन्हें पढ़ने का अवसर दिया जाएगा और कम से कम उन्हें 12वीं कक्षा तक पढ़ाया जाएगा और इसके साथ ही उन्हें प्री व्यवसायों की शिक्षा दी जाएगी। ज्योति ने कहा कि हम बच्चों को यह जानकर बहुत खुशी हो रही है कि हम बच्चों का अच्छा जीवन बानाने के लिए कुछ कदम उठाए जा रहें हैं। हम आशा करते हैं कि क्योंकि मैं एक लड़की हूं अभियान के द्वारा हम पर होने वाले अत्याचार कम हो सकें और हम लड़कियों को समाज में सम्मान मिले तथा हम आगे पढ़ पाएं और बाल विवाह जैसी घटनाएं न घटित हों।

बालकनामा अखबार ने बदली पांच बच्चों की जिंदगी

बालकनामा ब्यूरो

आगरा के गरीब नगर में पांच भाई बहन रहते हैं। लगभग डेढ़ साल पहले इनके पिताजी का स्वर्गवास हो चुका था। ये बच्चे अपनी मां के साथ नानी के घर पर आ गए। इनके नानाजी कपड़े बेचने का काम करते थे, पर उनकी भी तबियत खराब हो गई और इस तरह इनके घर की आर्थिक स्थिति बिगड़ती चली गई। इस बीच इनकी मां का भी स्वर्गवास हो चुका था।

ये बच्चे अनाथ हो गए इनके बूढ़े नाना नानी के सिवा इनका कोई नहीं रहा रहा जो इनकी देखभाल कर सकता। ये सब बच्चे स्कूल जाने के बजाय काम करने लगे इनके घर की हालत ऐसी हो गई थी कि खाने के लिए भोजन भी नहीं मिल पाता था।

इस वजह से छोटी छोटी बच्चियों ने गैस के पाइप की पैकिंग का काम करना शुरू कर दिया। इन भाई बहनों की इस तरह जिंदगी कैसी कटेगी, इनकी देखभाल कौन करेगा। इन मासूम बच्चों के सिर से माता पिता का साया उठ चुका था।

इनकी ये पूरी कहानी बढ़ते कदम संगठन बालकनामा अखबार में प्रकाशित हुई थी। अखबार के माध्यम से लोगों से ये अपील की गई थी कि वे आगे आएं और इनकी मदद करें। लंबे समय के संघर्ष के बाद बढ़ते कदम संगठन के प्रयास से इन बच्चों की आर्थिक मदद करने के लिए कुछ लोग आगे आए, जिनके सहयोग से इन बच्चों को आर्थिक सहायता प्रदान की गई। इस सहायता को बच्चों तक पहुंचाने के लिए बढ़ते कदम संगठन की तरफ से इनका भारतीय स्टेट बैंक में खाता खुलवाया गया।

इन बच्चों की कोई दस्तावेज ना होने के कारण खाता खोलने में बहुत परेशानी भी हुई, लेकिन संगठन के

अथक प्रयास से इनका खाता खुल गया।

इनमें से ही एक बच्ची संजना ने बताया कि मैं सोचती थी कि हम बेसहारा बच्चों की जिंदगी कैसे कटेगी हमारी देखभाल कौन करेगा। ये सोच सोचकर डर लगता था कि हमारी परवरिश की जिम्मेदारी कौन उठाएगा।

पर अब हम सब बहुत खुश हैं कि बढ़ते कदम के सहयोग से हमें आर्थिक सहयोग दिया जा रहा है। भारतीय स्टेट बैंक के खाते में हर महीने पैसे आ जाते है। मैं अपने बैंक में खुद जाकर पर्ची भरकर पैसे निकालकर लाती हूं, जिससे हम भाई बहनों का पूरे महीने का राशन आता है। मेरे भाई बहन रोज स्कूल पढ़ने जाते हैं। हम सभी भाई बहन बढ़ते कदम संगठन और बालकनामा अखबार के बहुत आभारी हैं, जिनके कारण हमारी जिंदगी को जीने का एक आसरा मिला।

रोजी रोटी के दबाव में बच्चे अपना रहे हैं बाल मजदूरी के नए नए तरीके

पृष्ठ 1 का शेष

मिली.का पाउच 30 रू.तथा बोतल 1000 मिली.के पाउच की कीमत 50 रू.है। उस महिला के साथ एक 13 साल की नाबालिग लड़की भी थी, जो बोरी से पाउच निकाल निकाल कर ग्राहकों को दे रही थी। हमने जब उस लड़की से स्कूल जाने के बारे में पूछा तो उसकी मां बोली कि इसके पास पढ़ने का समय नहीं है। उन्होंने बताया कि यह हमारा खानदानी काम है और हम इसे नहीं बंद कर सकते। सरकार पहले अंग्रेजी और देशी शराब बंद करे फिर हम लोगों को सरकारी नौकरियां और घर दे, तभी हम कच्ची शराब का कारोबार बंद करेंगे।

इस एक्सक्लूसिव बातचीत के दौरान उसने हमें यह भी बताया कि जिस जगह पर बैठकर मैं यह कच्ची शराब बेच रही हूं, उस क्षेत्र के पुलिस कांस्टेबल से लेकर थाना प्रभारी तक को हम लोग हर हफ्ते हजारों रूपए देते हैं। तभी तो यह धंधा यहां पर बैठकर कर पाते हैं। इस तरह झांसी शहर में अपने माता पिता के साथ नाबालिग लड़कियां भी कच्ची शराब बेच रही हैं और सरकार व प्रशासन चैन की नींद सो रहे हैं।

शादी पार्टियों में काम करके कर रहे हैं जीवनयापन

बालकनामा ब्यूरो

अकसर शादी पार्टियों में हमने और आप सब ने बच्चों को काम करते हुए देखा होगा। यह बहुत आम बात है कि शादी पार्टियों में बच्चे आपको बर्तन धोते, सजावट करते, फूल माला टांगते, कैटरिंग से लेकर वेटरिंग तक के सारे काम करते हुए नजर आ जाएंगे। इनके बिना तो मानो शार्दी पार्टियों की रौनक ही अधूरी जान पड़ती है, लेकिन ये बच्चे ये काम क्यों करते हैं, क्या इस ओर आपका ध्यान कभी गया है। इस बात को जानने के लिए जब बालकनामा अखबार के पत्रकारों ने दिल्ली से लेकर झांसी में होने वाली 20 से 30 छोट बड़े मैरिज गार्डेन, विवाह घर, होटलों इत्यादि का दौरा किया तो पाया कि ये छोटे छोटे 15 से 20 घंटे लगातार काम करते हैं। क्योंकि जिस दिन की पार्टी होती है, बच्चे उस दिन सुबह से लेकर दूसरे दिन सुबह तक बहुत काम करते हैं, ऐसा लगता है मानो इनके लिए अग्नि परीक्षा की घड़ी हो।

इस बारे में जब हमने सूजल (परिवर्तित नाम) से पूछा कि तुम इतना कठिन काम क्यों करते हो, तो उसने बताया कि हम लोग बहुत गरीब हैं। पिताजी शराब पीते हैं और माता बीमार रहती है। हम पांच भाई बहन हैं। हमारे घर का गुजारा बड़ी मुश्किल से होता है। हमारे साथ काम करने वाले सारे बच्चे बहुत गरीब परिवार से हैं। ये काम करने से एक तो हमें बचा हुआ खाना मिल जाता है और दूसरे चार पैसे भी कमा लेते हैं, जिससे घर का खर्च निकल आता है।

बाल विवाह की शिकार लड़कियां लगा रही हैं मेंहदी और बेच रही हैं गहने

चांदनी

हम सभी जब दिल्ली की प्रसिद्ध मार्केट जैसे सरोजनी नगर, लाजपत नगर, सीपी इत्यादि स्थानों पर शॉपिंग करने जाते हैं तो वहां पर बहुत सारी छोटी छोटी लड़कियां मेंहदी लगाते और आर्टिफिशियल गहने बेचती नजर आती हैं। ये छोटी छोटी बच्चियां किस तरह अपने सिर पर चुन्नी डाले सामान बेचती हैं और एक पल के लिए भी अपने सिर से चुन्नी नहीं उतरने देती। इसके पीछे बहुत बड़ा कारण है।

ये बच्चियां एक ऐसा जीवन जीने पर मजबूर हैं, जहां इनका बचपन इनसे छीन लिया गया है। इतनी कम उम्र में ही इनके नाजुक हाथों में ऐसी डोर पकड़ाई गई है, जिस कारण वह अपना बचपन एक बचपन की तरह नहीं जी सकती। जब बालकनामा की पत्रकार चांदनी ने इन बच्चियों से इस बारे में पूछा और यह जानने की कोशिश की कि ये बच्चियां अपने सिर से चुन्नी क्यों नहीं उतारती हैं, तो इन बच्चियों ने कुछ कुछ बातों का खुलासा करते हुए बताया कि इनके माता पिता ने इनका विवाह बचपन में ही करवा दिया है। जब चांदनी ने उनसे पूछा कि उनकी शादी किसके साथ करवाई

गई है तो उन्होंने बताया कि जिनके साथ उनकी शादी हुई है वो भी उनकी तरह एक बच्चा है।

उन्होंने यह भी बताया कि हमारे घरवाले हमें यह भी सिखाते है कि हमें अपने सिर से चुन्नी नहीं उतारनी है और न ही किसी लड़के के साथ दोस्ती करनी है। चुपचाप अपना काम करना है और लड़कों के साथ उठना, बैठना व खेलना कूदना नहीं है। इन बच्चियों को उनके घरवाले यह भी धमकी देते हैं कि यदि वे किसी छोटे लड़के के साथ खेलती हुई दिखाई दीं तो उनके ससुराल वाले उन्हें अपने घर में नहीं रखेंगे। इसलिए हम बच्चियां किसी के साथ नहीं खेलते है और न ही किसी बाहरी से दोस्ती करते हैं। बस हम उसे ही अपना जीवन साथी समझते हैं, जिसके साथ हमारे परिवारवालों ने हमारा विवाह किया है।

दुर्भाग्यवश ये बच्चियां बचपन में ही औरतों की तरह जीवन बिताने को मजबूर हैं। आज के इस आधुनिक दौर में इतनी कम उम्र में ही बाल विवाह इन बच्चों के जीवन के लिए एक अभिशाप की तरह है, जो इनसे इनका सब कुछ छीन रहा है। यदि समय रहते बाल विवाह ना रोका गया तो ऐसे न जाने कितने बच्चों का जीवन बर्बाद हो जाएगा और जब वही बच्चे एक दिन माता पिता बनेंगे तो फिर से वही कहानी दोहराई जाएगी। वह भी अपने बच्चों का बाल विवाह इस दबाव में करेंगे कि उनका विवाह भी तो इतनी कम उम्र में किया गया था तो हम भी अपने बच्चों का विवाह इसी उम्र में करेंगे। इस तरह की सोच हम तभी खत्म कर पाएंगे जब बाल विवाह पर रोक लगा पाएंगे। हमारी सरकार को इस बात पर गंभीरता से कार्य करना होगा। अगर सरकार बाल विवाह की इस बढ़ती हुई संख्या पर रोक नहीं लगा पाई तो बच्चों का भविष्य खतरे में पड़ जाएगा।

रिक्शे को धक्का लगाकर चलाते हैं अपनी रोजी रोटी

चांदनी

हमारे समाज में छोटे छोटे बच्चे ऐसे कितने ही कार्य करते हैं, जो इनके लिए बहुत खतरनांक साबित हो सकते हैं। यह बच्चे सिर्फ पैसा कमाने के चक्कर में ही काम नहीं करते, बल्कि यह बच्चे इसलिए भी काम कर रहे हैं क्योंकि इनके बारे में, इनके भविष्य के बारे में हमारी सरकार कुछ नहीं कर रही है, ताकि इन बच्चों को बाल मजदूरी के शिकंजे से आजाद किया जा सके। सरकार द्वारा इन बच्चों की जरूरतों पर ध्याान नहीं दिया जा रहा है और शायद यही वजह है कि यह बच्चे ऐसे कामों में लिप्त होते जा रहे हैं, जो किसी को नजर में नहीं आ रहे हैं।

हम आपको बाल मजदूरी की ऐसी सच्ची घटनाओं से रूबरू करा रहे हैं, जिसके बारे में शायद आपने भी कभी नहीं सोचा होगा। दक्षिणी दिल्ली की मायापुरी चौक पर पुल के ऊपर रिक्शे को धक्का लगाने का काम करते हैं। जब पत्रकार चांदनी ने इन बच्चों को इस तरह काम करते हुए देखा तो उन्होंने उनसे जाकर बातचीत की और यह पता लगाने की कोशिश की कि यह बच्चे पुल के ऊपर रिक्शे को धक्का लगाने का काम क्यों करते है? तो उन बच्चों ने बताया कि वह पैसे कमाने के लिए रिक्शे को धक्का लगाते है और रिक्शे पर लदे सामान को इस पार से उस पार और उस पार से इस पार लेकर आते हैं।

इन रिक्शों में भारी सामान होता है, जिसके कारण यह आसानी से पुल के ऊपर नहीं चढ़ पाता है। जब चांदनी ने पूछा कि उस रिक्शे में क्या सामान होता है तो बच्चों ने बताया कि जो लोग लकड़ी का काम करते हैं तो वह लकड़ी भरकर लेकर जाते हैं और जिनका कारखानों में लोहे के पुर्जे या और फैक्ट्रियों का सामान

होता है। जब यह सामान रिक्शे पर लादकर ले जाया जाता है तो हम बच्चे उसे धक्का लगाकर पुल के ऊपर चढ़ाते हैं। बच्चों ने बताया कि हम सुबह शाम पुल पर इसी तरह रिक्शे को धक्का लगाने का काम करते हैं और इस तरह कुछ पैसे कमा लेते हैं। बच्चों ने बताया कि पहले उन्हें धक्का लगाने के 5 रू मिलते थे पर अब उन्हें 10 रू मिलते हैं।

इन बच्चों को बाल मजदूरी के चंगुल से बचाने के लिए सरकार को बच्चों के लिए पुनर्वास से लेकर उनके रहने व खाने पीने की व्यवस्था करनी चाहिए, जिससे इन बच्चों को ऐसे खतरनाक काम न करने पड़ें। अगर आप हमारी इस बात से सहमत हैं तो अपने विचार हमें जरूर बताएं और बाल श्रम मुक्त समाज के निर्माण में हमारा सहयोग करें।

बच्चों से साफ कराया जाता है ट्रकों का मलबा

चांदनी

दिल्ली की कबाड़ी बस्ती में एक बहुत बड़ा खत्ता है। यहां पूरी दिल्ली का कूड़ा कचरा ट्रकों से लाकर डाला जाता है और इन ट्रकों में जो काम करने वाले वर्कर होते हैं वे छोटे बच्चे होते हैं। इनकी उम्र 8 से 15 साल के बीच की होती है। ये छोटे छोटे बच्चे 24 घंटे ट्रकों के साथ चलते हैं। ये ट्रक से वह कूड़ा कचरा उतारने का काम करते हैं। जब ट्रक का सारा कूड़ा नीचे डाल देते हैं, उसके बाद ट्रक कसे पूरी तरह से साफ करते हैं।

नाम न छापने की शर्त पर एक बच्चे ने अपने कार्य के बारे में बताते हुए कहा कि वह बहुत दिन से ये काम कर रहा है। सबसे पहले तो वह कूड़े से भरे ट्रक को खोलता व बंद करता है। ट्रक का सारा कूड़ा कचरा उतारने के बाद वह उसकी सफाई व धुलाई करता है। उसने बताया कि ट्रक के मालिक इस काम के लिए बड़े व्यक्ति को नहीं रखते हैं। क्योंकि वह जानते है कि अगर इस काम के लिए बड़े व्यक्ति को रखा तो वह ज्यादा पैसे लेकर काम करेगा और ज्यादा समय तक काम नहीं करेगा। जितने समय तक कि एक दिहाड़ी होती वह उसी समय तक काम करेगा। इससे ट्रक मालिक को बहुत नुकसान होगा।

इस तरह जितने पैसे वह बच्चों को काम पर रखकर कामाता है, उतने पैसे वह बड़े व्यक्ति से नहीं कमा पाएगा। इसके अलावा बच्चों को काम पर रखने का सबसे बड़ा जो फायदा होता है वो यह है कि उन्हें कुछ भी काम करने के जितने भी पैसे मिलते हैं वो उसी में ही खुश हो जाते हैं। दिल्ली में इस तरह का काम करने वाले अधिकतर बच्चे बंगाल से हैं और कुछ ऐसे बच्चे भी हैं, जिन्हें गांवो और कस्बों से काम करने के लिए लाया जाता है। काम करते समय इन बच्चों को बहुत सी समस्याओं से जूझना पड़ता है, जैसे कि यह सही से सो नहीं पाते, अपना पूरा समय ट्रक में ही बिताते हैं और अगर समय मिलता है तो वह उस ट्रक में ही सो जाते है।

देश में बाल मजदूरी बहुत ही भयावाह रूप लेती जा रही है और इसके लिए बनाए गए कानून भी बेअसर होते जा रहे हैं। बाल मजदूरी को रोकने के लिए हम सभी को

आगे आना होगा। हमारे लिए यह जानना बहुत जरूरी है कि आप इन बच्चों के भविष्य के बारे में क्या सोचते हैं? यदि आपके पास कोई सुझाव है बाल श्रम को समाज से उखाड़ दें कने के लिए या कोई ऐसी कहानी है, जिसे समाज के सामने लाना चाहते हैं तो अखबार में दी गई ईमेल आई डी पर हमें लिखकर जरूर भेजें।

सड़क एवं कामकाजी बच्चों से प्रियन कनुगो ने किया मिलने का वादा

चांदनी, रिपोर्टर शहीद कैंप

बढ़ते कदम के सदस्यों ने राष्ट्रीय बाल अधिकार आयोग के सदस्य श्री प्रियन कनुगो जी से मुलाकात कर उन्हें बताया कि सड़क एवं कामकाजी बच्चों को सबसे अधिक समस्या उन्हें शिक्षा प्राप्त करने में आ रही है। बच्चों की यह परेशानी सुनकर श्री प्रियन कनुगो जी ने कहा कि अगर आपको शिक्षा से संबंधित किसी तरह की परेशानी आती है तो आप शिक्षा आयोग में अपनी शिकायत दर्ज करें। फिर राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग के द्वारा उस पर तुरंत कार्यवाही की जाएगी। उन्होंने कहा कि बच्चों को स्कूलों में जो भी समस्या होती है उसके बारे में भी आप हमें बता सकते हैं, ताकि हम उन बच्चों की मदद कर सकें। जब बालकनामा के पत्रकार शम्भू ने श्री प्रियन कनुगो जी से कहा कि सर हम आपके बारे में अखबार द्वारा बच्चों को बताना चाहते है तो उन्होंने कहा कि हम एक दिन बढ़ते कदम के हेड ऑफिस आकर सड़क एवं कामकाजी बच्चों से बात करेंगे और उनके बारे में जानेंगे और उनसे मिलकर बात करेंगे, ताकि बच्चे अपनी समस्या के बारे खुद बता सकें।

यूनाईटेड नेशन में भी उठेगा सड़क एवं कामकाजी बच्चों की गणना का मुद्दा

चांदनी

कंसोर्टियम ऑफ स्ट्रीट चिल्ड्रन संगठन की सीईओ सारा थॉमस बढ़ते कदम संगठन के सदस्यों से मिली और उनसे बात की। बातचीत के दौरान संगठन की सदस्य चांदनी ने उन्हें बताया कि बढ़ते कदम संगठन का लक्ष्य है कि सड़क एवं कामकाजी बच्चों को एक प्लेटफॉर्म मिले और वे अपनी आवाज को लोगों तक पंहुचा सकें। अपने इस लक्ष्य को पूरा करने की ओर संगठन अपने कदम बढ़ा चुका है।

इसके लिए संगठन के सदस्यों द्वारा यह निर्णय लिया गया कि यदि सड़क एवं कामकाजी बच्चों को उसके अधिकार दिलाना है तो उसके लिए उसकी गणना होनी बहुत जरूरी है। चांदनी ने उन्हें यह भी बताया कि हम सब सदस्यों द्वारा सड़क एवं कामकाजी बच्चों की गणना करने के कार्य का शुभारंभ भी हो गया है। इसके बाद संगठन की राष्ट्रीय सचिव ज्योति सारा थॉमस को गणना की सारी प्रक्रिया के बारे में जानकारी दी कि बच्चों द्वारा किस प्रकार यह गणना की जा रही है।

यह सुनकर और गणना के बारे में

जानकर सारा थॉमस बहुत खुश हुई और कहा कि मैं संगठन के सदस्यों की इस बात से सहमत हूं। उन्होंने कहा कि सड़क एवं कामकाजी बच्चों की गणना जरूर होनी चाहिए और मैं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इस मुद्दे को जरूर रखूंगी। मैं यूनाईटेड नेशन के सम्मुख भी आप सभी बच्चों की बात को रखूंगी और उन्हें इस बात की जानकारी दूंगी कि बढ़ते कदम - सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संगठन किस प्रकार सड़क एवं कामकाजी बच्चों की गणना करने का कार्य कर रहा है।

तोता-मैना संवाद

तोता - उड़ते उड़ते एक डाली पर बैठ जाता है और कहता है अरे मैंना कहो कैसी हो?

मैंना - हां तोता मैं तो ठीक हूं, तुम बताओ कैसे हो ?

तोता - मैंना मैं भी ठीक हूं। तुम्हें पता है तोता मैं सड़क एवं कामकाजी बच्चों के साथ एक बड़ी मीटिंग में गई थी।

तोता - वाह मैंना यह तो बहुत अच्छी बात है। कौन-कौन था इस मीटिंग में और किस विषय पर थी यह मीटिंग?

मैंना - तोता बहुत बड़े बड़े लोग थे, इस मीटिंग में और यह मीटिंग बाल श्रम पर की गई थी।

तोता - बाल श्रम पर भी ऐसा क्या खास था, जो मीटिंग बुलानी पड़ी, सब तो ठीक चल रहा है।

मैंना - तोता ऐसा कैसे कह सकते हो, कि सब ठीक चल रहा है। तुम्हें पता है कि अभी हाल ही में बढ़ते कदम के सदस्यों ने सड़क एवं कामकाजी बच्चों की गणना की है और गणना के दौरान उन्हें यह पता चला कि बहुत सारे बच्चे बाल श्रमिक हैं।

तोता - मैंना यह तो बहुत ही दुख की बात है। और क्या हुआ इस मीटिंग में?

मैंना - इस मीटिंग में उन बच्चों के बारे चर्चा की गई, जिन्हें बाल श्रम से रेसक्यू करके लाया जाता है।

तोता - तो क्या हुआ मैंना। यह तो अच्छी बात है कि बच्चों को बाल श्रम से रेसक्यू किया जाता है। लेकिन इस पर भला क्या चर्चा करना?

मैंना - क्यों तोता यह तो बहुत महत्वपूर्ण मुद्दा है कि जिन बच्चों को रेसक्यू किया जाता है, वह बच्चे कैसे बाल मजदूरी में आ जाते हैं और उस बच्चे का मालिक उसे जो हरजाना देता है वह बच्चे तक पहुंचा है या नहीं, इसका कोई रिकार्ड किसी के पास नहीं होता। तो बताओ फिर यह कैसे पता चलेगा कि वह पैसा बच्चों तक पहुंचा है या नहीं?

तोता - हां मैंना, यह तो मैंने सोचा ही नहीं।

मैंना - तभी तो इस मीटिंग में चांदनी दीदी ने सभी सदस्यों को बताया कि हमें इस बात के कारण का पता लगाना चाहिए कि बच्चे क्यों बाल मजदूर बन जाते हैं।

तोता - हां मैंना, चांदनी दीदी ने बिल्कुल सही कहा। मैंने भी बहुत से बच्चों को काम करते हुए देखा है।

मैंना - तुम्हें पता है तोता, इस मीटिंग में एक सदस्य ने कहा कि जो बच्चे बाल मजदूरी करते है, उन बच्चों के माता पिता उन्हें काम पर लगवाते है और कुछ के मालिक खुद ही जबरदस्ती उन्हें काम पर रख लेते हैं। ऐसे में हमें कैसे पता लगेगा बच्चे बाल मजदूरी के चंगुल में कैसे आ जाते है।

तोता - इस पर क्या जवाब दिया हमारी चांदनी दीदी ने?

मैंना - यह सुनते ही चांदनी दीदी ने कहा कि जो बच्चा सिग्नल पर भीख मांगता है, कबाड़ा बीनता है, सड़क पर रहता है और ढाबे में काम करता है। उस बच्चे के बारे में सारी जानकारी पुलिस के पास होती है। तो पुलिस का यह कर्तव्य है कि उस बच्चे की मदद करे, न कि उसे बाल मजदूरी करने के लिए छोड़ दे। उन्हें उसे समझाना चाहिए और एक चाइल्ड फ्रैंडली बनकर उसे गलत संगति में पड़ने से बचाना चाहिए। अगर ऐसा किया जाए तो ज्यादा से ज्यादा बच्चों को बाल मजदूरी में फंसने से रोका जा सकता है।

तोता - हां मैंना चांदनी दीदी ने एकदम सही बात कही है और क्या क्या बताया हमारी चांदनी दीदी ने?

मैंना - इस मीटिंग के दौरान चांदनी दीदी ने सभी सदस्यों को बताया कि दक्षिणी दिल्ली में 13 या 14 साल के बच्चे पुल के ऊपर रिक्शे को इस पार से उस पार और उस पार से इस पार लाने का काम करते हैं। यह बच्चे रोज सुबह शाम भारी सामान से लदे रिक्शे को धक्का लगा कर पुल के ऊपर चढ़वाते हैं, जिसके इन बच्चों 5 से 10 रू तक मिलते हैं।

तोता - मैना यह तो कुछ भी नहीं अब जो खबर मैं बताने जा रही हूं, उसे सुनकर तो तुम्हारे होश ही उड़ जाएंगे।

मैंना - तो फिर जल्दी बताओ तोता।

तोता - झांसी में 14 से 15 साल की लड़कियां कच्ची शराब बेचने व बनाने का काम करती हैं और यह काम बहुत समय से चल रहा है। दक्षिणी दिल्ली में 10 से लेकर 18 साल के बच्चे मलबे को ट्रक से उतारने का काम करते है तथा उस ट्रक की पूरी सफाई करते है और उसी ट्रक में सो जाते हैं। यह बच्चे पूरे पूरे दिन काम करते हैं और शादी पार्टियों में बच्चे काम करते हैं, जिसमें बच्चे बहुत से खतरनांक काम कर रहे हैं।

मैंना - तोता यह तो बड़ी ही दुख की बात है यह सुनकर तो मेरी आंखे नम हो गईं।

मैंना - हां तोता तुम सही कह रहो। बच्चे बड़ी ही संख्या में बाल श्रम में आ रहे है। यदि जल्द ही इनके लिए सरकार द्वारा कुछ ठोस कदम नहीं उठाया गया, तो यह बहुत ही भयावह रूप ले लेगा। हम सभी को इसके लिए कुछ न कुछ करना होगा।

इतना कहकर तोता मैंना उड़ पड़े।

बच्चों ने सीखे अच्छी पत्रकारिता के गुण

बालकनामा ब्यूरो

विश्व प्रसिद्ध सड़क व कामकाजी बच्चों के अपने अखबार 'बालकनामा' के बारे में तो हम सब जानते हैं। चूंकि यह अखबार सड़क व कामकाजी बच्चों का अखबार है और बच्चे खुद ही खबरें तलाशतें है और खुद लिखते हैं। इस अखबार के पत्रकारों ने कहीं से पत्रकारिता की कोई डिग्री नहीं ली है और न ही इनको इसकी कोई ट्रेनिंग दी गई है। बिना किसी प्रशिक्षण के ये पत्रकार बहुत ही सटीक ढंग से अपनी खबरों को लिखते हैं और लोगों तक अपनी बात पहुंचाने का प्रयास करते हैं।

बालकनामा अखबार के इन पत्रकारों की इस सराहनीय कार्य को और निखारने पहुंची लंदन से टॉय बॉक्स से आई रिपोर्टरों की एक टीम। लंदन से आई फियोना और नूमी ने जब अखबार के पत्रकारों से बात की तो उन्होंने बताया कि हम चाहते हैं कि हम और कैसे अच्छे ढंग से अपनी खबरों को लिखें, ताकि पाठकों का ध्यान बच्चों की खबरों की और आकर्षित कर सकें।

नूमी और फियोना ने अखबार को

और बेहतर करने के लिए पत्रकारों को टिप्स दिए। उन्होंने पत्रकारों को बताया कि वे कहानी को कैसे, किस तरह और किस ढंग से अच्छे तरीके से लिख सकते हैं। टिप्स देते हुए उन्होंने कहा कि कहानी में सबसे पहले जरूरी शब्दों का होना बहुत आवश्यक है, जैसे कि बच्चे का नाम, उम्र, कहां रहता है, क्या करता है और उसकी क्या समस्या है। वह सड़क पर क्यों रहता है और काम क्यों करता है। इसके बाद खबर लिखते समय बच्चे की भावनाओं का होना बहुत जरूरी है और बच्चे की उन भावनाओं को अपनी किताब में लिख लेना चाहिए। इसके बाद यदि इन सभी सवालों के जवाब हमारे पास आ चुके है तो हम उस खबर को अच्छी तरह तैयार कर सकते हैं।

कहानी के अंत में कुछ ऐसा लिखें कि लोग उसे जानने और मानने पर मजबूर हो जाएं। इससे लोग बच्चों की मदद भी कर सकते हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात आपकी खबर की हेड लाइन छोटी और कैची होनी चाहिए। ताकि लोग हेडलाइन पढ़कर हर पूरी कहानी पढ़ने के लिए उत्साहित हो जाएं।

बच्चों के हेल्पलाइन नंबर

चाइल्ड लाइन नंबर **1098**

पुलिस हेल्पलाइन नंबर **100**

ये दोनों ही नंबर टोल फ्री नंबर हैं। यदि आप किसी मुसीबत में हों तो दोनों ही नंबरों पर 24 घंटे में कभी भी फोन करके मदद ले सकते हैं

ईंट भट्टों पर जलता और पत्थरों में पिसता बचपन

बालकनामा ब्यूरो

झांसी का बुंदेलखंड अति महत्वपूर्ण शहर है। यह शहर बहुत तेजी से विकास की ओर गति पकड़ रहा है। इस शहर की सीमा से सटे मध्य प्रदेश के टीकमगढ़ के छोटे बड़े गांवों से लगभग सैकड़ों लोग बाजार से रोजमर्रा की खाने पीने की सामग्री से लेकर भवन निर्माण जैसे सीमेंट, सरिया, बालू, ईंटे तक खरीदने यहां आते हैं। क्योंकि इस शहर की सीमा के चारों ओर ईंट, भट्टे, सीमेंट, सरिया, बालू, मिट्टी और क्रैसरों की भरमार है। इन ईंट, भट्टों, मौरंगों की खनन में काम करने के लिए बड़ी संख्या में बाल मजदूर आते हैं, जो अपने परिवार का भरण पोषण करने के लिए काम करने को मजबूर हैं। क्योंकि यह क्षेत्र सूखे के कारण अति पिछड़ेपन का शिकार है, जिसके कारण यहां बेरोजगारी अपने पैर पसारे बैठी है।

बालकनामा के पत्रकारों ने जब इन क्षेत्रों का दौरा किया तो पाया कि लगभग 12 से 16 वर्ष तक के नाबालिग बाल मजदूर बड़ी संख्या में यहां काम कर रहे हैं। जब पत्रकार ने अपनी

पहचान छिपाकर एक खरीददार के रूप में पहुंचे तो उन्होंने यहां पर कार्य करते हुए बाल मजदूरों को देखा। वहां पहुंचकर उन्हें ज्ञात हुआ कि इन स्थानों पर बाल मजदूर ही नहीं, बंधुआ मजदूर भी कार्य करते हैं। सरकार द्वारा झांसी व बुंदेलखंड के आस पास के क्षेत्रों में काम करने वाले बाल मजदूरों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है।

शंभू ने स्वास्थ्य से जुड़े अहम मुद्दों पर डॉ बंसल से की चर्चा

शंभू

निजामुद्दीन में एक हेल्थ कैंप लगाया गया। जहां आई॰एस॰आई सरकारी अस्पताल के डॉक्टर श्री राकेश बंसल जी ने नशा करने वाले बच्चों का हेल्थ चेकअप किया। इस हेल्थ कैंप के बारे में जब बालकनामा के पत्रकार शंभू को पता चला तो वह भी डॉक्टर से मिलने पहुंचे। शंभू ने डॉक्टर बंसल को अपने बारे में बताते हुए कहा कि मैं बालकनामा का पत्रकार हूं और मैं सड़क व कामकाजी बच्चों व उनके स्वास्थ्य से जुड़े कुछ अहम मुद्दों पर आपसे बात करना चाहता हूं।

शंभू ने डॉक्टर से पूछा कि सड़क व कामकाजी बच्चों को वे किस नजरिए से देखते हैं? डॉक्टर ने कहा कि मैं हमेशा इन बच्चों के चेहरे पर मुस्कान देखना चाहता हूं। चूंकि मैं एक डॉक्टर हूं, इसलिए मैं चाहता हूं कि ये बच्चे कभी किसी दुर्घटना का शिकार न होने पाएं और हर बीमारी से बचें। क्योंकि ये बच्चे जिन स्थानों पर रहते हैं वहां पर बहुत आसानी से बीमारियों का आदान प्रदान हो जाता है। इसलिए ये बच्चे हमेशा किसी न किसी बीमारी का शिकार हो जाते हैं। इन बच्चों को स्वस्थ रहने के लिए इन्हें नशीलों पदार्थों के सेवन से बचना चाहिए।

शंभू ने डॉक्टर से पूछा कि आपको सड़क व कामकाजी बच्चों के साथ समय बिताकर और उनका हेल्थ चेकअप करके कैसे लगा? डॉक्टर बंसल ने कहा कि मेरे पास आई.एस.आई सरकारी अस्पताल में तरह तरह के लोग आते हैं और मुझे उन सबको देखना पड़ता है। मैं कहना चाहूंगा कि डॉक्टर को किसी भी मरीज को छोटा या बड़ा नहीं समझना चाहिए। मुझे सड़क व कामकाजी बच्चों की चिकित्सा करने से बहुत खुशी मिलती है। मैं हमेशा यह चाहता हूं कि ये बच्चे भी आगे बढ़े और बुरी आदतों से दूर रहें।

अंत में शम्भू ने डॉक्टर साहब को बढ़ते कदम संगठन के बारे में बताया कि संगठन पिछले 13 वर्षों से बच्चों के कार्य कर रहा है। उनके अधिकारों को लेकर उनकी आवाज सरकार तक पहुंचाने के लिए वह अलग अलग कार्यक्रमों का भी आयोजन करता है, जिसमें बच्चों की भागीदारी सुनिश्चित की जाती है। डॉक्टर साहब ने कहा कि वास्तव में आप इन बच्चों के लिए बहुत अच्छा कार्य कर रहे हैं। आप से मेरा यही निवेदन है कि ऐसे ही इन बच्चों को मदद करते रहें। इसके साथ ही उन्होंने संगठन को बहुत सारी शुभकामनाएं भी दी।

संपादक सहयोगी

चांदनी, ज्योति, शंभू और मजीद

बालकनामा टाइम्स ऑफ इंडिया में

TIMES CITY | CHILDREN'S DAY

Street kids strive for their own space

Carry Out A Survey To Map Life Of Children On Roads In Sarai Kale Khan-Nizamuddin Area

बालकनामा फ्रेंच मीडिया में

Un journal pour exister

बालकनामा हिंदुस्तान टाइम्स में

metro

Street performer to editor, 18-year-old makes news

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं